HISTORY

B.A.(Hon's) PART-I

Paper-I (Ancient Indian History)

Unit-I(Caleolithic Culture)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 92.

ताम्र पाषाण कालीन संस्कृति

(CALEOLITHIC CULTURE)

नवपाषाण काल के पश्चात प्रारंभ होने वाला धातु ज्ञान का युग ताम्रपाषाण काल था। आधुनिक अनुसंधान के अनुसार 1800 ई. पू. से 1000 ई तक का काल ताम्रपाषाण काल माना जाता है। इसे ताम्र पाषाण काल इसलिए कहा जाता है क्योकि इस काल में मनुष्य ने पाषाण व ताम्र दोनों के ही उपकरण निर्मित किए।

धातु ज्ञान हो जाने के उपरान्त भारतीय मानव ने पाषाण की तुलना में ताम्र का अधिक प्रयोग दो प्रमुख कारणों के अन्तर्गत किया। पहला, ताँबा अधिक लचीला ठोस व मजबूत होता है, दूसरा, ताँबे के औजार को टूटने पर पुनः जोड़ा जा सकता है।

अद्यतन खोजों से ताम्र पाषाण संस्कृति के अवशेष प्रमुख स्थलों, जैसे-महाराष्ट्र के जाखे, नेवासा, चंद्रोली, नासिक आदि, दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान में आहार व निलुण्ड, मध्य प्रदेश के एरण, कायथा व पूर्वी भारत के पांडुराजादिवी, वीरभूम तथा गंगा घाट से प्राप्त होते हैं।

उपरोक्त स्थानों से पत्थर व ताँबे के निर्मित उपकरण, जैसे-ताँबे की कुल्हाड़ी, पहिएदार गाड़ियों, तलवार, तीर-कमान, भाले, कटार आदि प्राप्त हुए हैं।

उल्लेखनीय है कि जैसे ही मानव को टिन का ज्ञान हआ. उसने टिन व जस्ते को मिलाकर कांसे का निर्माण किया जो कि ताँबे के अनुपात में ज्यादा कठोर व ठोस होता है। यहीं से ताम्रपाषाण युग का पतन और कांस्य युग का प्रारम्भ हुआ।

ताम्र पाषाण संस्कृति की विशेषताएँ—

इसकी निम्न विशेषताएँ हैं

(1) उपकरण- उत्खनन से प्राप्त उपकरण व हथियार प्रस्तर व ताम्र दोनों से निर्मित थे। इस संस्कृति के उपकरण लघु थे। इसीलिए अधिकांश इतिहासकारों ने इस काल को लघु पाषाण काल की संज्ञा दी है।

(2) कृषि-चावल, गेहूं, बाजरा, उड़द आदि कृषि क्षेत्र में प्रमुख उत्पादन थे। इस काल में मानव ने हल का उपयोग प्रारम्भ कर दिया था।

(3) पशुपालन-- इस युग में गाय, बकरी, बैल, गधा, ऊँट इत्यादि पालतू पशुओं में थे। इनमें से बैल, ऊँट व गधा सामान ढोने के काम में आते थे।

(4) गृह-निर्माण -- नेवासा नामक स्थान पर हुए उत्खनन से ज्ञात होता है कि इस काल का भारतीय मानव घास-फूस की बनी झोपड़ियों में निवास करने लगा था।

(5) मिट्टी के बर्तन-उत्खनन से प्राप्त प्यालो, तश्तरियों आदि से ज्ञात होता है कि ताम्रपाषाणकालीन मानव मिट्टी के बर्तन बनाता था।

(6) व्यापार-सूत कातना, कपड़ा बुनना, पशुपालन इत्यादि मानव के व्यापार के साधन थे। पहिएदार गाड़ी व नाव यातायात के प्रमुख साधन थे।

(7). धर्म- इस काल का मानव प्राकृतिक शक्तियों की उपासना, जादू-टोने में विश्वास करने लगा था। उत्खनन से प्राप्त अवशेषों, ताबीज व शहरों से इस बात की पुष्टि होती है उत्खनन से प्राप्त लघु मृण्मूर्तियों के आधार पर स्पष्ट होता है कि इस काल का मानव मातृदेवी की उपासना करता था। कब्रों से प्राप्त अस्थि-पंजर दर्शाते है कि इस काल का मानव मृत व्यक्ति को गाड़कर अन्त्येष्टि संस्कार करता था।

ताम्र पाषाण काल का महत्व (Importance of Paleolithic Age)

इस काल में सर्वप्रथम नदी, तटों व पहाड़ी क्षेत्रों में ग्राम इकाई का निर्माण किया गया। नवपाषाण काल की तुलना में कृषि का उत्पादन इसमें अधिक था। इस काल में धातु का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। ताम्रपाषाण काल मे धातु का ज्ञान उद्योग-धन्धों के निर्माण में वास्तविक प्रगति थी। सर्वप्रथम नाव को यातायात के साधन के रूप में तथा पशु को भार ढोने के लिए उपयोग में लाना इस काल की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इस काल में मानव ने अपनी बस्तियों की किलेबन्दी भी प्रारम्भ कर दी थी।

धन्यवाद